RESEARCH PAPER | Literature | Volume : 3 | Issue : 11 | Nov 2013 | ISSN - 2249-555X

कादम्बरी के गद्यबद्ध संक्षेप : एक अवलोकन
Kadambari Ke Gadhyabaddh Sankshep : Ek Avalokan

KEYWORDS

Dr. Mrs. Ramandeep Kaur

Assistant Professor, Post Graduate Government College, Sector-46, Chandigarh.

ABSTRACT बाण की कादम्बरी अपनी अद्‌भुत कथावस्तु, रसात्मकता तथा आश्चर्यजनक शैली के कारण सदा कौतूहल की वस्तु रही है। परन्तु इसके बृहदाकार, विकट शैली, विराट् वाक्यावली, अनन्त विशेषणतति से आच्छन्न अन्तहीन वर्णनों तथा दुस्साध्य भाषा ने इसे बहुधा श्रमसाध्य तथा विद्वद्‌गम्य बना दिया है। साधारण पाठक के लिए वह असाध्य तथा अगम्य है। वह उसके आस्वादन से वंचित रह जाता है। इस रोचक किन्तु कष्टसाध्य गद्यकाव्य को जनसुलभ बनाने के लिए इसके सरल एवं संक्षिप्त रूपान्तरों की परम्परा आरम्भ हुई। अब तक कादम्बरी के गद्य और पद्य में निबद्ध 12 सार प्रकाश में आ चुके हैं। ये संक्षेप बाण की कृति की महत्ता तथा लोकप्रियता और युग–युगों में उसके आस्वादन के प्रति पाठकों की उत्सुकता के परिचायक हैं।

बाण संस्कृत–गद्य का एकच्छत्र सम्राट् है। अलंकृत गद्य का चरम वैभव,अपनी समूची भव्याभव्य संभावनाओं के साथ, उसकी कादम्बरी में सम्पूर्ण सजधज के साथ प्रकट हुआ है। संस्कृत गद्य के अतुल ऐश्वर्य,उसकी सूक्ष्म भंगिमाओं, हृदयहारी मृदुता तथा उद्वेगकारी कर्कशता का जिस कौशल से दोहन किया जा सकता था, उसका राजसी ठाट कादम्बरी में विकीर्ण है। बाण की कला का स्पर्श पाकर कादम्बरी छन्दो–विहीन कविता बन गयी है। सुबन्धु ने गद्य के जिस शास्त्रीय पैटर्न का प्रवर्तन किया था, बाण ने उसे ग्रहण तो किया किन्तु उसमें 'काव्योचित सौन्दर्य' का समावेश कर उसे अपूर्व स्निग्धता प्रदान की है। कला–शिल्प तथा भावशबलता के मंजुल मिश्रण के कारण ही संस्कृत गद्यकारों में बाण का स्थान सर्वोपरि है।

''रस–प्रवणता,कला–सौन्दर्य, वकोक्तिमय अभिव्यंजना–प्रणाली, सानुप्रासिक समासान्तपदावली,दीपक,उपमा और स्वाभावोक्ति की रुचिर योजना,जिसके बीच–बीच में श्लेश, विरोधाभास और परिसंख्या को गूँथ दिया गया है'',बाण के गद्य की निजी विशेषता है। बाण के हाथ में आकर संस्कृत गद्य कविता की उदात्त भावभूमि को पहुँच गया है। परन्तु बाण की रसवन्ती 'कादम्बरी' में मिश्रित कर्कशता से खीझकर वेबर ने उसके गद्य की तुलना भारतीय कान्तार से कर डाली है, जिसमें पथिक को अपने धैर्य और श्रम की कुल्हाड़ी से भीषण समास आदि के झाड़–झंखाड़ों को काटकर अपना मार्ग स्वयं बनाना पड़ता है। उस पर भी उसे अप्रचलित शब्दों के रूप में उपस्थित वन्यजीवों की दहाड़ का सामना करना पड़ता है। वेबर का यह आक्षेप सर्वथा निराधार नहीं है। अपनी विकटबन्धता, समाससंकुलपदावली, श्लिष्ट एवं दीर्घ वर्णनावलि के कारण कादम्बरी पण्डितवर्ग के बौद्धिक विलास की वस्तु होने का आभास देती है। वस्तुतः कोई विषय,भाव तथा अभिव्यंजना–प्रकार ऐसा नहीं रहा,जिसका बाण ने आद्यन्त मन्थन न किया हो। सहृदय आलोचक ने 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वमश् कह बाण की इस उपलब्धि का अभिनन्दन किया है।

कादम्बरी की जटिलता तथा बृहदाकार के कारण इसके सरल एवं संक्षिप्त रूपान्तरों की परम्परा का सूत्रपात हुआ, जिससे सामान्य जन भी इसका रसास्वादन कर सकें। गद्य–पद्य में निबद्ध इसके लगभग 12 सार ज्ञात अथवा उपलब्ध है।[1]

कादम्बरी के उपलब्ध सारों को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम कोटि के सार वे हैं, जिनमें कादम्बरी का विभिन्न लेखकों द्वारा स्वतन्त्र, स्वभाषा में पद्यबद्ध संक्षेप प्रस्तुत किया है। अभिनन्दकृत कादम्बरी – कथासार, मण्डनप्रणीत कादम्बरीदर्पण तथा धुण्डिराजकृत अभिनवकादम्बरी इस वर्ग के प्रतिनिधि हैं। लघुकादम्बरीसंग्रह, चन्द्रापीडचरित, चन्द्रापीडकथा, कादम्बरीकथासार, कादम्बरीसार तथा कादम्बरीसंग्रह बाण की शब्दावली में निबद्ध, कादम्बरी के गद्यात्मक संक्षेप हैं। इनके अतिरिक्त सूर्यनारायण शास्त्री–कृत कादम्बरीसार कादम्बरी का गद्यबद्ध स्वतन्त्र संक्षेप हैं। इन द्विविध गद्यात्मक सारों को द्वितीय वर्ग का प्रतिनिधि माना जा सकता है।

लघुकादम्बरीसंग्रह[2] कादम्बरी का कदाचित् संक्षिप्ततम गद्यबद्ध संक्षेप है। इसके रचयिता महामहोपाध्याय रायंपेट्टकृष्णमाचार्य 'अभिनवभट्टबाण' ने कादम्बरी के विशाल कथानक को केवल 34 मुद्रित पृष्ठों में समाहित कर अनुपम संग्रह–कौशल को परिचय दिया है। कादम्बरी के समान यह संक्षेप भी पूर्व तथा उत्तरभाग में विभाजित है। इसकी रचना में कवि का उद्‌देश्य पाठक को कादम्बरी के मूल कथानक से परिचित कराना है। फलतः इसमें बाण की कृत्रिम गद्यशैली के अलंकरणस्वरूप विराट् वर्णनों तथा विकट समासान्तपदावलियों को पूर्णतया बहिष्कृत कर दिया गया है। यह कृति यद्यपि संयम और सन्तुलन के कारण उल्लेखनीय है, परन्तु कादम्बरी को संक्षिप्ततम बनाने की व्यग्रता के कारण कहीं–कहीं वाक्यरचना अधूरी एवम् अस्पष्ट प्रतीत होती है तथा शुकनासापदेश, हार और अक्षमाला का परिवर्तन इत्यादि कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रसंगों की उपेक्षा कर दी गयी है।

चन्द्रापीडचरित[3] कादम्बरी का बाण की भाषा में निबद्ध दूसरा महत्त्वपूर्ण सार है। इसके कर्त्ता पं॰ वी॰ अनन्ताचार्य हैं। सार की प्रकृति और सीमाओं के अनुरूप इसमें भी बाण की वर्णनशैली के चमत्कार को प्रदर्शित करने का प्रयास लक्षित नहीं होता है। यहाँ कथावस्तु को ही प्रमुखता दी गयी है। लघुकादम्बरीसंग्रह के समान चन्द्रापीडचरित में यद्यपि वर्णनों का सर्वथा अभाव नहीं है, परन्तु यहाँ जिन वर्णनों को ग्रहण किया गया है, उन्हें अत्यन्त संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। विन्ध्याटवीवर्णन से लेकर शुक को जाबालि–आश्रम तक ले जाने का वृत्तान्त केवल पाँच लघुकाय वाक्यों में निरूपित किया गया है।[4] विद्याग्रहण के पश्चात् यौवराज्याभिषेक तथा दिग्विजय–प्रयाण का प्रसंग भी अत्यन्त संक्षिप्त है। यह लाघव कविकौशल का परिचायक है । परन्तु इस संक्षेप में यत्र–तत्र अनुपातहीनता दिखाई देती है। अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंगो का कवि ने अतीव सूक्ष्म उल्लेख किया है जबकि गौण विषयों का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन है। उदाहरणार्थ,शुकनासोपदेश का यहाँ संकेत मात्र है जबकि चन्द्रापीड के विस्मयजनक अवसान की पुष्टि में शुकनास ने विविध शापवार्ताओं का सविस्तार वर्णन किया है। इस संक्षेप में शुकनासकथा का पृथक् उल्लेख किया है[5],जो मूल के अनुरूप नहीं है।

चन्द्रापीडचरित के पूरक के रूप में रचित चन्द्रापीडकथा[6] पं॰ वी॰ अनन्ताचार्य द्वारा प्रणीत दूसरा कादम्बरीसार है। कवि के अनुसार सौधाधिरोहण में सोपान की भाँति यह संक्षेप मूल के अध्ययन के लिए उपयोगी है। पूर्वोक्त संक्षेपों की अपेक्षा यह संक्षेप अधिक विस्तृत है। चन्द्रापीडचरित की रचना में लेखक का उद्‌देश्य मूल कथानक को संक्षेप में प्रस्तुत करना था, चन्द्रापीडचरित में वह बाण के गद्य के समूचे वैभव से पाठक को अवगत कराने को आतुर प्रतीत होता है। इसलिए इसमें मूल के लगभग सभी वर्णन लघ्वाकार में उपन्यस्त हैं। कथा तथा वर्णनों का सुरुचिपूर्ण समन्वय इस संक्षेप की प्रमुख विशेषता है।

बलरामसदाशिव– अग्निहोत्री–विरचित कादम्बरीकथासार[7] कादम्बरी का अन्य गद्यात्मक सार है। इस सार का ध्येय कादम्बरी के कथानक को प्रस्तुत करने के साथ –साथ बाण की अलंकृत गद्यशैली के वैभव को भी प्रदर्शित करना है। अपेक्षाकृत बृहदाकार होते हुए भी इसमें कादम्बरी के दीर्घ एवं जटिल वर्णनों को संक्षेप में ही ग्रहण किया गया है। अनेकत्र उनका सर्वथा परित्याग करने में भी संकोच नहीं किया है। चन्द्रापीडकथा के समान इस संक्षेप में भी कथानक तथा वर्णनों में लगभग समान अनुपात है।

महादेव शिवराम आप्टे–कृत कादम्बरीसार[8] तथा महामहोपाध्याय रायमेट्ट कृष्णमाचार्य – प्रणीत कादम्बरीसंग्रह[9] कादम्बरी के बाण के शब्दों में ग्रथित, सर्वाधिक विस्तृत संक्षेप है। इनमें कादम्बरी के अनावश्यक विस्तृत वर्णनों को यद्यपि संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है तथापि इस तथ्य का अपलाप नहीं किया जा सकता कि इन संक्षेपों मे वर्णनभाग अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है, जो सार की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। कादम्बरी के विस्तृततम संक्षेप कादम्बरीसंग्रह में पौरांगनाओं के संभ्रम का प्रसंग ग्रहण न करना विचित्र प्रतीत होता है। इस दृष्टि से कादम्बरीसार मूल का विस्तृत किन्तु सम्पूर्ण सार है।

पूर्वविवेचित गद्यात्मक कादम्बरी – संक्षेप बाण के शब्दों में निबद्ध हैं। इनमें मौलिकता का अभाव है। सूर्यनारायणशास्त्रीकृत कादम्बरीसार[10] कादम्बरी का एकमात्र स्वतन्त्र गद्यबद्ध संक्षेप है जिसकी रचना कवि ने स्वभाषा में की है। इस दृष्टि से कादम्बरी के सारों मे इसका स्थान पद्यबद्ध संक्षेपों की भाँति महत्त्वपूर्ण है। यह संक्षेप अभिनन्द के पद्यबद्ध संक्षेप कादम्बरीकथासार का गद्यबद्ध रूपान्तर कहा जा सकता है।[11] अभिनन्द ने अपने ग्रन्थ का आठ सर्गों में विभाजन किया

Volume : 3 | Issue : 11 | Nov 2013 | ISSN - 2249-555X

है। कादम्बरीसार आठ बिन्दुओं में विभक्त है । कथानक का बिन्दुओं में विभ. ाजन भी अभिनन्द के सर्गानुसारी विभाजन के समान है। अभिनन्द के संक्षेप में मूल से जो भिन्नताएँ पाई जाती हैं, वे कादम्बरीसार में भी दृष्टिगोचर होती हैं।

REFERENCE

1. न्यू कैटेलोगस कैटेलोगरम, मद्रास विश्वविद्यालय, तृतीय भाग, पृ॰ 388 द्य 2. लघुकादम्बरीसंग्रह, लघुगद्यसंग्रहरत्माला, द्वितीय मुद्रण, 1968 द्य 3. चन्द्रापीडचरितम् (तृतीय संस्करण) 1984, प्रकाशकः—आर. एस. वैद्यर एण्ड सन्स, पलघाट। द्य 4. चन्द्रापीडचरितम्, पृ॰ 2. द्य 5. शुकः स्वकथां पुनः प्रारभते .....इति शुककथान्तः। वही, पृ॰36,38 द्य 6. प्रकाशक—रामनारायण ालाल, प्रयाग, 1946 द्य 7. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1968 द्य 8. कादम्बरीसार (द्वितीय संस्करण) 1891 द्य 9. कादम्बरीसंग्रह, गद्यसंग्रहकल्पलता, प्रथम मंजरी, नवम मुद्रण, 1963 द्य 10. एस. सूर्यनारायण शास्त्री, सिकन्दराबाद, 1974 द्य 11. संपादक — प॰ दुर्गाप्रसाद तथा के॰ पी॰ परब, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1888. द्य